सलोने सौन्दर्य का ही दूसरा नाम है

देह की गढ़न
जब सलोनेपन से घुलमिल कर
साधक को झकझोर दे तो वही नाम हैं- रतिप्रिया यक्षिणी,
अपने नाम के ही अनुकूल प्रियता देने में
सदैव प्रस्तुत और उत्तेजकता से भरी,
प्रत्यक्ष अनुभूति पर आधारित एक
साधक का रोमांचक
विवरण . . .

*रतिप्रिया यक्षिणी

फिर उसकी आंखें कुछ और तरल हुई, भीगती हुई मन की मादकता का एक संदेश लेकर कुछ कहने को तैयार हो गयी और देखते ही देखते उसके सारे शरीर में खुद को मिटा कर, घुला-मिला कर एकरस कर देने की बातें आंखों में मय की एक मस्ती बनकर मेरे चारों ओर छलक पड़ी . . .

. . . हल्की भूरी और सुनहरी रंगत लिये आंखें छलक रही थी और मदहोशी में तन पर पड़े वस्त्र ढुलकने को तैयार हो गए थे . . . सारा अस्तित्व ही समर्पण और ललक को कहने लग गया, हल्की सी कामुकता की पर्त मेरे चारों ओर छाकर मुझे बेसुध और अस्त व्यस्त करने पर उतर आयी . . .

. . . हल्का सांवला रंग लिए कुछ भरा-भरा सा बदन ज्यों मांसलता की एक हल्की पर्त लुनाई से कुछ और भिंच कर तन गयी हो, और सारी सुडौलता एक अक्स बनकर उतर रही हो।

वास्तव में अद्‌भुत ही होता है यक्षिणी का सौन्दर्य . . . क्या रंग, क्या रूप, क्या तीखे नैन-नक्श, क्या सुडौलता, क्या लुनाई और क्या कमनीयता! ज्यों देह के सितार पर खिंचे कई-कई तार हों . . . किसी एक को भी बस हौले से छू भर ही नहीं दिया कि एक झंकार सारे जिस्म में थर-थरा उठी . . . प्रकट नहीं हुई तो कई-कई बार की साधनाओं में भी नहीं और **जब रीझ गयी तो उन्हीं साधनाओं को सफल करती जीवन के किसी भी पल में, किसी भी मोड़ पर और किसी भी रूप में . . .**

. . . दोनों हाथों को बांध कर दुहरा होता, बेंत की टहनी सा कोमल लचीला बदन, हथेलियों को एक दूसरे से बांध मसलती हुई, बिखरती हुई लटों को कुछ और भी बिखरे हुए गुप-चुप यही कह रही थी कि अब मुझे संभालो, मुझे बिखरने से बचा लो . . .

देह पर फूलों के गुच्छे, वेणी में लगा गजरा, तीखे लाल रंग में रंगे ओंठ, नाखून और माथे की बड़ी सी गहरी नीली बिंदी सभी कुछ उसके रोम-रोम में समायी मादकता और यौवन का निमंत्रण ही बन गए जब वह मेरे समीप आई।

धन, रूप, यौवन, एकांत की अठखेलियों का सुख, नृत्य, संगीत और रोम-रोम से पूरी देह के एक-एक कतरे से समर्पण-- इसके अतिरिक्त साधक को और चाहिए भी क्या? रही-सही कसर तो कामोन्मत्त इशारों, छेड़खानियों, निगाहों की सिहरन और मिलन के उन क्षणों में कानाफूसियों से केवल और केवल यक्षिणी ही पूरा कर सकती है, क्योंकि यौवन को एक उफान तक ले जाना, उसकी मस्ती में खुद

भी खो जाना और अपने सिद्ध साधक को भी समेट लेना तो केवल यक्षिणी ही जानती है . . . **रतिप्रिया यक्षिणी! रति-सुख का पूर्ण प्रभाव देने की यौवन की साकार मूर्ति,** साधक के एक-एक रोम को एक विचित्र सी उत्तेजना और सनसनी से भर देने का रहस्य जानने वाली अपूर्व मादक और कामोत्तेजक यक्षिणी!

शृंगार के चुनाव की बात हो या मन में गहरे तक उतर जाते उसके वस्त्रों के रंग, इसको तो केवल रतिप्रिया ही समझती है और जिसका सम्पूर्ण अस्तित्व, जिसकी सम्पूर्ण रचना साधक को पूर्णता से सुख प्रदान करने के लिये ही की गयी हो, उससे अधिक इसे समझ भी कौन सकता है . . . तड़पती हुई नृत्यरत देह की अठखेलियां, सलोने तन पर पड़े दूधिया गजरे की महक, रतिप्रिया तो साधक के जीवन की एक हलचल है, उसे उदासियों के घेरे से निकाल कर, खामोशी को तोड़कर देह के नृत्य में सहभागी बना लेने की अदा है अप्सरा साहचर्य **देती है तो अपने रूप से, किन्नरी अपनी मधुरता से, योगिनी अपनी आत्मीयता से और वहीं यक्षिणी अपने भोग से!** साधक के जीवन में प्रत्येक स्थिति का एक निश्चित अर्थ और स्थान है। प्रत्येक दशा का एक आनन्द है जिससे वह जीवन के सभी रसों से परिचित हो सके, तृप्त होकर जीवन को जान सके, जीवन में अभावग्रस्त न रहे, कुंठित और तृष्णा से भरा न रह सके।

जो सौन्दर्य के पारखी हैं, जिन्हें मादकता की परिभाषा का पता है, जो यौवन की अठखेलियों से गुजरे है, जोश को समझे हैं, वे ही समझ सकते हैं कि सौन्दर्य में सलोनेपन का कैसा गहरा रंग होता है। रूप- सौन्दर्य की प्रचलित धारणाओं से कुछ अलग हटकर उन तीखे नयनों की मादकता और देह के हल्के से सांवलेपन में कैसे-कैसे कटाक्ष छुपे होते है, कैसा निमंत्रण झलकता होता है, कैसा आमंत्रण बुला रहा होता है . . .

. . . और तब देह के एक-एक उभार, एक-एक मोहक सुडौल मोड़ और घुमाव उभर-उभर कर, निखर-निखर कर वस्त्रों का अस्तित्व नकारने को मचल पड़ते हैं, जिन पर पड़ता हल्का सा प्रकाश एक-एक रेखा को बखूबी उजागर कर उसमें छिपी कविता की गुनगुनाहट को मुखरित कर देता है।

यक्षिणी ऐसी ही एक कविता है, देह की भाषा में लिखी मादक कविता, जिसकी एक-एक पंक्ति में सुडौलता और अतिरिक्त मांसलता ही समायी हो।

ऐसी 'कविता' को पढ़ा जा सकता है, उसे सराहा जा सकता है और उसके एक-एक अक्षर में यदि डूबा जा सकता है तो केवल साधना से क्योंकि **यक्षिणी और वह भी रतिप्रिया केवल देखने की वस्तु नहीं; गुनगुनाने की, सरस होकर बिखर जाने की घटना है,** ज्यों भौंरा जब रस का पान मदमस्त होकर कर लेता है, तब अपने को संभाल नहीं पाता, गुनगुनाता हुआ यों ही उड़ता फिरता है!

जिन्हें यौवन की कामना है, गुनगुनाते हुए उड़ने की चाहत है, भोग को लेकर कोई उहापोह नहीं हैं, जीवन को पूरी मस्ती से जीने का हौसला है, वे साधक अपने जीवन में रतिप्रिया की साधना करते ही हैं क्योंकि **यही तो है वह साधना जो दो टूक स्पष्ट रूप से प्रचुर भोग की भाव-भूमि तैयार करती है। सुख, धन, ऐश्वर्य, सम्पदा देने के साथ ही साथ सारे शरीर में एक हलचल मचा देती है,** प्रेम का पहला सबक सिखा देती है जिससे बासी पड़ गए तन पर एक अनोखी सी फुहार आकर यौवन के बसंत को कहने लग जाती है. . . और तब साधक के पास से उसकी चाल और हसरतों से भी फागुन की एक नशीली, हवा बहने लग जाती है। जहां रतिप्रिया की साधना है फिर वहीं निरंतर ऐसी घटना है जिससे न कभी भी मन बासी पड़े न तन और ऐसे मिलन से ही जो संगीत उत्पन्न होता है, वही जीवन का रस है, **रतिप्रिया तो अपने नाम में ही अपने रहस्य को स्पष्ट करती है,** अपने को बेसुध होकर प्रस्तुत करती है।

रतिप्रिया यक्षिणी की साधना मन के कायाकल्प की साधना है और विशेषतयः मध्य आयु के पुरुषों के लिए, अनुभवी साधकों के लिए आवश्यक साधना है क्योंकि ऐसे रससिद्ध साधक ही वास्तव में रतिप्रिया जैसी अनिन्द्य रूपसी का यौवन भोग करने में समर्थ हो सकते हैं, उसके मादक संकेतों की भाषा समझ कर एक हलचल और चंचलता का सुख-लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

यदि स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो यह कामदेव साधना का ही एक विशिष्ट रूप है और इसी कारणवश इस साधना में जिस प्रकार से क्रम अपनाया जाता है वह मूलतः कामदेव पूजन ही होता है। कामदेव की विभिन्न सोलह कलाओं को ही अपने तन-मन में समाकर साधक वस्तुतः पूर्ण क्षमता से रतिप्रिया का यौवन - भोग करने में समर्थ हो सकता है। किसी भी शुक्रवार को सम्पन्न की जाने वाली इस साधना में प्रत्येक साधना की ही भांति कुछ साधना - सामग्री आवश्यक रहती है। **कामदेव यंत्र, सोलह काम बीज, कामदेव गुटिका, रति गुटिका, मूंगे की माला एवं रतिप्रिया यक्षिणी यंत्र** इस साधना में नितांत आवश्यक रहते हैं। यह क्रमबद्ध रूप से दृढ़ता से सम्पन्न की जाने वाली ऐसी विशिष्ट साधना है जिसमें साधक को अपना ध्यान और एकाग्रता प्रयासपूर्वक बनाए ही रखना पड़ता है।

साधना के दिवस पर अपने साधना कक्ष में अपनी रुचि से कोई भी वस्त्र पहनकर पूर्ण आनन्दित भाव के साथ पीले रेशमी आसन बैठें। साधना कक्ष विशेष रूप से सुसज्जित व सुगन्धित कर लें। दिशा दक्षिण के अतिरिक्ति कोई भी हो सकती है तथा सामने बाजोट पर भी रेशमी वस्त्र बिछा कर **कामदेव यंत्र** स्थापित करें। यहां एक बात स्पष्ट करनी आवश्यक है कि कामदेव यंत्र, अनंग यंत्र, रतिकाम यंत्र, रतिराज यंत्र आदि सभी मूलतः एक ही यंत्र के विभिन्न नाम हैं अतः साधक भ्रमित न हों। इस कामदेव यंत्र के समक्ष रति गुटिका तथा कामदेव गुटिका क्रमशः दाएं व बाएं स्थापित करें। इस के बगल में ही रतिप्रिया यक्षिणी यंत्र स्थापित करें तथा सम्पूर्ण पूजन सामग्री के आगे सुगन्धित पुष्पों की पंखुडियों की सोलह ढेरियां बनाकर सोलह काम बीज स्थापित करें। सर्वप्रथम कामदेव यंत्र का पूजन इत्र, सुगन्धित पुष्प की पंखुड़ियों, अक्षत और केसर से करें और प्रत्येक सामग्री 'क्लीं' बीज मंत्र के साथ अर्पित करें। तदुपरांत कामदेव गुटिका व रतिप्रिया गुटिका का पूजन भी उपरोक्त सामग्री से करें। रतिप्रिया यक्षिणी यंत्र का पूजन केवल सुंगधित पुष्पों एवं अक्षत से करें तथा सोलह काम बीजों का पूजन निम्न प्रकार से केसर के द्वारा करें—

१. श्रद्धायै नमः, २. प्रीत्यै नमः, ३. रत्यै नमः, ४.भूत्यै नमः, ५. कान्तायै नमः, ६. मनोभवायै नमः, ७. मनोहरायै नमः, ८. मनोरमायै नमः, ६. मदनायै नमः, १०. उत्पादिन्यै नमः, ११. मोहिन्यै नमः, १२. दीपिन्यै नमः, १३. शोधिन्यै नमः, १४. वश्यंकरिण्यै नमः, १५. रंजनायै नमः, १६. प्रियदर्शनायै नमः।

उपरोक्त कला-स्थापन पूजन के पश्चात् इन सोलह काम कलाओं की हृदय में स्थापन भावना प्रबल करते हुए **मूंगे की माला** से निम्न रतिप्रिया यक्षिणी का मूल मंत्र जप करें।

मंत्र

ॐ ह्रीं आगच्छ रति सुन्दरि स्वाहा

उपरोक्त मंत्र केवल तीन माला करना पर्याप्त है तथा सम्पूर्ण मंत्र जप के समय घी का दीपक निरन्तर जलते रहना अनिवार्य है। साधक इस क्रम में विशेष सतर्क व चौकन्ना होकर बैठे। उपरोक्त मंत्र के प्रभाव स्वरूप उसे तीव्रता, स्वेदन (पसीना) इत्यादि अनुभव हो सकता है किन्तु ये स्थितियां इस बात की सूचक होती हैं कि साधक के काम-भाव की पुष्टि के साथ-साथ रतिप्रिया का आगमन सूक्ष्म रूप में हो गया है। मंत्र जप के पूर्व ही यदि प्रत्यक्षीकरण हो जाए तो साधक रतिप्रिया यंत्र यक्षिणी के हाथ में देकर उससे जीवन पर्यन्त भार्या सदृश्य सुख-भोग देने का वचन लेकर शेष मंत्र-जप अवश्य पूर्ण करें। इस साधना को तीन शुक्रवारों तक करना अनिवार्य है। साधना की समाप्ति पर साधक कामदेव गुटिका व रति गुटिका एक साथ एक ही धागे में पिरो कर धारण कर लें, शेष सामग्री लाल वस्त्र में बांध कर जल में विसर्जित कर दे। इस साधना का एक गोपनीय रहस्य है कि प्रायः साधना करने के कुछ समय बाद ही यक्षिणी किसी विशेष स्वरूप में साधक के जीवन में इस प्रकार आती है जिससे फिर जीवन पर्यन्त साथ रह सके। अतः इसमें साधना के मध्य प्रत्यक्षीकरण की अपेक्षा साधना के उपरांत सतर्क रहना विशेष लाभप्रद होता है। साथ ही साथ **इस साधना की एक अन्य विशेषता यह भी है कि यह शीघ्र विवाह प्रयोग भी है।** जिन साधकों का विवाह बड़ी आयु का हो जाने के बाद भी न सम्पन्न हो रहा हो उनके लिये यह अनुकूल साधना है जिससे शीघ्र ही रतिप्रिया यक्षिणी किसी भी प्रकार से साधक के जीवन में आकर उसे मनोवांछित भोग प्रदान करती है।

. . . जीवन के किसी भी पल में, किसी भी मोड़ पर और किसी भी रूप में, क्योंकि यही तो रतिप्रिया की विशेषता है!